

धर्मरत्न बजाचार्य सुरेश श्री महाबिहार

DH 305

ॐ नमः श्री ३ प्रभायाऽला कश्च नाय नमः ॥

113

मिथिलं पदस्यं थापन॥ नमो ध्यायामस्तु लक्ष्म्य॥ वदुष्ये वि
 क्षमासंस्कारकयगुक्कलट॥ कापकापूडमकिक्क१पूडमक्क
 यपात्रवल्लिपात्र१, मंलुकत्र१ मिथिलं पदं वा मयपद्मं गंधपत्रं व
 दूतवस्तु नस्तमस्तु लयादथ समसकस्यं स्वनं सिधमूकसकं यनमस्तु लवा
 वास्यं पूजा रुय॥ मन्मस्तु लपकं गयम्वधन॥ सिधकय॥ मस्तु लथिनं किननं सना
 माधियाय॥ रुटसा लोकमत्रयदिमुलियाय॥ ॥ **१३ नमो वक्ष्याय॥** नमो धर्माय॥ नमो संघाय॥ **ॐ श्रीः**
 श्रीमद्वज्रसहस्रनामस्तु वज्रवज्रकमनाय सम्यक्ज्ञानावल्लभसनाकनाय नमः ॥ **ॐ** सर्वव
 दूतं नमो मिस्तु नमो मत्रदीये वपूनपू४ धर्मत्रये वसंघनत्रये नमो मित्रिने नमः ॥ नमो मंत्रीकनूदा

गोपेकांतावयव॥समन्त्राहवन्तुमावडाअसखादिसंखिकुथिनां॥ध३॥उंनमागीअमाघपाहालाकड्य
 वाय॥जिंकावसंभुवनाथंकनूधथंस्मिअमाघपाहालाकड्य॥अमाघपाहालाकड्य॥अमाघपाहालाकड्य॥
 स्वतावडासर्वधर्मास्वतावडाहाहं॥अन्यताहानवडास्वतावडाहाहं॥अन्यताहानवडास्वतावडाहाहं॥
 लं॥अन्यताहानवडास्वतावडाहाहं॥अन्यताहानवडास्वतावडाहाहं॥अन्यताहानवडास्वतावडाहाहं॥
 विधुधनमाहयं॥अन्यताहानवडास्वतावडाहाहं॥अन्यताहानवडास्वतावडाहाहं॥अन्यताहानवडास्वतावडाहाहं॥
 नूकंपामया॥अन्यताहानवडास्वतावडाहाहं॥अन्यताहानवडास्वतावडाहाहं॥अन्यताहानवडास्वतावडाहाहं॥
 नं॥अन्यताहानवडास्वतावडाहाहं॥अन्यताहानवडास्वतावडाहाहं॥अन्यताहानवडास्वतावडाहाहं॥
 हल्लाकावडासूर्यमल्लं॥अन्यताहानवडास्वतावडाहाहं॥अन्यताहानवडास्वतावडाहाहं॥अन्यताहानवडास्वतावडाहाहं॥
 हं॥अन्यताहानवडास्वतावडाहाहं॥अन्यताहानवडास्वतावडाहाहं॥अन्यताहानवडास्वतावडाहाहं॥

५ उं न जि ना य स्वा हा ॥ पूर्व ॥

पूर्व

द किं

नेमव

ष्यं प्र किं स्वा हा ॥ **मा नि सि त्र हा** ॥ **न दि दि हा** ॥ उं न मा घां क हा य स्वा हा ॥ **म हा** ॥ **नं क स स** ॥ उं ना वा ये स्वा हा ॥ **प किं**
 उ त्प न स ॥ उं ह क टि ना वा य स्वा हा ॥ **वा य व म** ॥ **म स द वा** ॥ उं स ध न क मा ला य स्वा हा ॥ **वृ त्तां प रु क स** ॥ उं
 मा य वि ला कि न ड्य वा य स्वा हा ॥ **वे म स खि त प म** ॥ उं स व स र्व म य स्वा हा ॥ **वा य वा क म द स** ॥ उं ह य नृ वा य स्वा हा
 ॥ **म न क प म** ॥ ८ ॥ **पूर्व दान** ॥ उं न प ना जि ना य स्वा हा ॥ **द कि न दान** ॥ उं मा त्र स न्य पु म ई ना य स्वा हा ॥ **प कि म** ॥
 उं व न दा य स्वा हा ॥ **उ र्म व उ रि म** ॥ ५ ॥ **क उ वि दि** ॥ उं न का व म रु क्प स म ना य स्वा हा ॥ **म र्म** ॥ उं ज या य स्वा हा
 ने म व ॥ उं वि ज या य स्वा हा ॥ **वा य वा** ॥ उं ज य वि ज या य स्वा हा ॥ ॥ **म न** ॥ ५ ॥ **पूर्व जि नि म धा** ॥ उं व न दा य स्वा
 हा ॥ व संध वा य स्वा हा ॥ उं न रु य पु दा य स्वा हा ॥ उं ध नं दा य स्वा हा ॥ **इ जि नि नि म धा** ॥ **वा द स द य दि** ॥ उं पु रु क
 व द्या य स्वा हा ॥ उं न मा ४ स व रु पु ला वि न दि ह्य ना जा य न थ म ना य स्वा हा ॥ उं न मा सिं ह वि कि न ना जा य न थ म
 ना य ॥ उं न मा सु पु नि छि न म ति कू ट ना जा य न थ म ना य ॥ **प किं व उ द न** ॥ ५ ॥ उं न मा ४ स म न व म्भ रु न रु

कूटनाजायन अगनायायानिभाविपञ्चिनन अगनाय ॥ नमः शिखिनन अगनाय ॥ नमः विष्णुवन अगनाय ॥

४ ॥ **द किं न द न** ॥ नमः कुकुडुडन अगनाय ॥ नमः कनकमनयन अगनाय ॥ ॐ नमः का। इयन अगनाय ॥

१३ नमः शाकमनयन अगनाय ॥ ४ ॥ **पूर्वमदय** ॥ ॐ नमः सपनि किर्लिन नामध्यायन अगनाय ॥ **द किं**

ॐ नमः समकावराहविजिन सीयमात्रियन अगनाय ॥ ॐ नमः ॐ नमः कुकुधुधु धियन अगनाय ॥ ॐ नमः ॐ नमः वलपुलासि ध्वनन अगनाय ॥ ४ ॥ **ॐ निषादजाय** ॥ नमः कयकुकाय ॥ ॐ पयनाय स्वाहा ॥ ॐ धयना

नाय स्वाहा ॥ ॐ दीयनाय स्वाहा ॥ ॐ गंधनाय स्वाहा ॥ **ॐ निवकुतावा** ॥ नमः कयपूर्वदिगा ॥ ॐ ॐ नमः सुवा

धियनय स्वाहा ॥ **पूर्व** ॥ ॐ यमाय प्रमाधियनय स्वाहा ॥ **द किं** ॥ ॐ वनूनाय नागधियनय स्वाहा ॥ **प किं** ॥ ॐ क

यलाय यकाधियनय स्वाहा ॥ **उ क न** ॥ ॐ नमः गजाधियनय स्वाहा ॥ ॐ नमः नाकसाधियनय स्वाहा ॥ ॐ वाय

वपवनाधियनय स्वाहा ॥ ॐ ॐ नमः रुनाधियनय स्वाहा ॥ ८ ॥ ॐ ॐ इवमः स्वाहा ॥ **लोकाधियनय स्वा**

३

हा॥ **प** ॥ ॐ वज्रानकृताधिप नमस्तुते ॥ **द** ॥ ॐ सूर्याग्निराधिप नमस्तुते ॥ **प** ॥ ॐ रुद्रपुत्रि, लोकमाह्वय
ता ॥ ॐ आग्निविनायक नमस्तुते ॥ ॐ नागायक नमस्तुते ॥ ॐ अश्विनायक नमस्तुते ॥ ॐ अश्विनायक नमस्तुते ॥ ॐ अश्विनायक नमस्तुते ॥
नमामि सगणं अश्विनं वज्रं पुनः पुनः धर्मं बलं च संपन्नं नमामि सगणं नमस्तुते ॥ पदं पवित्रं नमस्तुते ॥ पदं पवित्रं नमस्तुते ॥
पञ्चलोकेश्वरं नमस्तुते ॥ वंदे सर्वमिदं हिमादयं ॥ ॥ अस्माकं यगुतं धर्मं तु संधत्तु ॥ ॥ नमोपाय
दहनाकृताधिप नमस्तुते ॥ दाया नां पुनः ॥ अयामि पुनः पुनः संपन्नं विनष्टं अश्विनायक नमस्तुते ॥
सर्वसत्त्वानि कृताधिप नमस्तुते ॥ अश्विनायक नमस्तुते ॥ अश्विनायक नमस्तुते ॥ अश्विनायक नमस्तुते ॥ अश्विनायक नमस्तुते ॥
नमो गणेशाय ॥ नमो गणेशाय ॥ नमो गणेशाय ॥ नमो गणेशाय ॥ नमो गणेशाय ॥ नमो गणेशाय ॥ नमो गणेशाय ॥
दामहि सहा उरु ॥ अश्विनायक नमस्तुते ॥ अश्विनायक नमस्तुते ॥ अश्विनायक नमस्तुते ॥ अश्विनायक नमस्तुते ॥ अश्विनायक नमस्तुते ॥
मकुटादि **प** क ॥ अश्विनायक नमस्तुते ॥ अश्विनायक नमस्तुते ॥ अश्विनायक नमस्तुते ॥ अश्विनायक नमस्तुते ॥ अश्विनायक नमस्तुते ॥

पलंघं उत ॥ धनं जायतामसं ॥ ॐ आ ४ नमो भगवते ॥ ॐ हं हं स्वाहा ॥ ॐ नमो ॥ समाधि वलि वियपुता ॥
कति संकल्प लोके नमो भगवते ॥ ॐ नमो भगवते ॥ ॐ नमो भगवते ॥ ॐ नमो भगवते ॥ ॐ नमो भगवते ॥
पुनः पुनः सावना ॥ स्वरावधुता स्वादि ॥ ॐ नमो भगवते ॥ ॐ नमो भगवते ॥ ॐ नमो भगवते ॥ ॐ नमो भगवते ॥
लोके नमो भगवते ॥ ॐ नमो भगवते ॥ ॐ नमो भगवते ॥ ॐ नमो भगवते ॥ ॐ नमो भगवते ॥
तद्वत् काय पुनः पुनः सावना ॥ ॐ नमो भगवते ॥ ॐ नमो भगवते ॥ ॐ नमो भगवते ॥ ॐ नमो भगवते ॥
समाधिर्यागुं ॥ ॐ नमो भगवते ॥ ॐ नमो भगवते ॥ ॐ नमो भगवते ॥ ॐ नमो भगवते ॥
ॐ नमो भगवते ॥ ॐ नमो भगवते ॥ ॐ नमो भगवते ॥ ॐ नमो भगवते ॥ ॐ नमो भगवते ॥
दिवा नमो भगवते ॥ ॐ नमो भगवते ॥ ॐ नमो भगवते ॥ ॐ नमो भगवते ॥ ॐ नमो भगवते ॥
विजयाय वज्रपुं ॥ ॐ नमो भगवते ॥ ॐ नमो भगवते ॥ ॐ नमो भगवते ॥ ॐ नमो भगवते ॥

३ यन्मिसाक १ मायमरुतनस्यसुतकाजीमांजाय सिद्धवत्
महसमर्थ

स्वाहा॥ उं आर्यत्वं कथितं वज्रपुष्पं मिष्टं स्वाहा॥ उं आर्यं ममापां कृत्वा यवजपुष्पं मिष्टं स्वाहा॥ उं आर्यं वसुधवा
यवजपुष्पं मिष्टं स्वाहा॥ उं आर्यं सर्वं निवृत्तं विकल्पं वज्रपुष्पं मिष्टं स्वाहा॥ उं आर्यं हे पृथ्वी जाय वज्रपु
ष्पं मिष्टं स्वाहा॥ उं आर्यं हयग्रीवाय वज्रपुष्पं मिष्टं स्वाहा॥ यन्मायं कुरु ॥ लोकं सर्वं तं हि नं मोक्षं ममापां गुण
सागवं ममिमां ह कुरु ममोत्ति नमामि ममापां पादौ ॥ श्रीं कानं स मरुवं नाथं कवृधालि ममानं ममापां पादौ ना
माना थं ला कना थं नमामि ह ॥ ॥ नमो ॥ इति मन्त्रः कुरु ॥ १२ ॥ धनं वलि विय ॥ वलि विय ॥ ॥ इति ॥
मन्त्रः ॥ इति मन्त्रः कुरु ॥ कन २ कुरु २ स्वादि ॥ स्वस्व स्वादि ॥ ॥ लोकं सर्वं वलि ॥ नमो लोकनाथ
य ४५ वासन नय कुरु स्वादि ॥ ४५ वादि नपाद पमायन ॥ ४५ वा नान के सला दुन सविं ना नत्यनाय मरुका कवृधोका
य ४६ दं वलि पश्चिम नादि सहि नमो कुरु २ सर्व सत्वानां वन वकादि ॥ ४६ वादुला वय २ उदुन २ समुधन २ व इत्य
नधर्मस्येन संयस्येन सत्यवादि सत्येन उं आर्यं हं हं स्वाहा ॥ ॥ नमो वदुय कवृधालि हृदयाय पनमा

समंतात् विहीय ॥ धे धातु कमन रुय सत्ताथ महादृष्ट कन कानिं धा दूद वलि दिव्यग श्रव साधनां मय उक्त
मां सर्व सत्तानां वमन रुनाया संम्यक्तं वा द्यो पतिं सापताय उं साहस गन वन वज्र उषा साह दृ स्वाहा ॥ उं प्रज्ञा पात्र मिना
महा उवासा महा पीना महा नीला जल पंकज पद्म रुक् ॥ दूद वलि गृह्ण २ पक्ष मृदादि उज्जिघुं पिव २ पुष्टा वईनी
कले २ मखाव ई निधिलि २ वृद्धि वई नी स्वाहा ॥ उं अमा यपा की १ सर्व दृष्ट समय मूडा पुहं ऊ क धर्म ग्मा सि समूह कानां
आनि पृष्ठिं व क्रां क व रु दृ स्वाहा ॥ धन पं वा म न ता द द न सां ही य क ॥ द वा छ वा सर्व उं ग सि द्या सा का स प न ना
मव ग ध वी य का ग द ऊ क वि उ मी व स नि द वा क नै क जान पि धि वी न न रुं रु ना ऊ नि वि श्र य या मि ना उ स प न ना
वा सह रु रु सं धे ॥ दृ त्वा ० हा मु रु न ग दार्थ उ म न य छि नि व स नि उ ना ऊ न द रु इव स न न य ड्य उ था द या न व वि
म छु ल ० न ग न ष सर्व रू व व स नि स नि न स सर्व व स ग न ष न ता न य वा पि रु ना धि वा सा पी न दा ग ष व प न
ष न ता न य वा पि रु ना धि वा सा क प ष व ग म हा द धि ष ऊ म धा ष ष व नि म न ष द वा धि वा सा स न कान न ष

मं सर्वनाथगतालयं॥ॐ नमो भगवते वासुदेवाय॥ॐ नमो भगवते वासुदेवाय॥ॐ नमो भगवते वासुदेवाय॥
यं प्रणिच्छ स्वाहा॥ मधुलमसुखानडयकवलिसमय॥ॐ वृद्धमधुलसुखीविद्यानूत्सावह॥ वृद्धमधुलसुखा
नवाय॥ॐ आर्यवैलाचनाय वज्रपूष्यप्रणिच्छ स्वाहा॥ॐ॥ॐ आर्यश्रीकृष्णाय वज्रपूष्यप्रणिच्छ स्वाहा॥
ॐ॥ॐ आर्यनलसहवाय वज्रपूष्यप्रणिच्छ स्वाहा॥ॐ॥ॐ आर्यश्रीमि नारायण वज्रपूष्यप्रणिच्छ स्वा
हा॥ॐ॥ॐ आर्यश्रीमयसिद्धि य वज्रपूष्यप्रणिच्छ स्वाहा॥ॐ॥ॐ आर्यमामय वज्रपूष्यप्रणिच्छ स्वाहा॥
ॐ॥ॐ आर्यवावनीय वज्रपूष्यप्रणिच्छ स्वाहा॥ॐ॥ॐ आर्यपद्मनीय वज्रपूष्यप्रणिच्छ स्वाहा॥ वायुय
ॐ॥ॐ आर्यनाय वज्रपूष्यप्रणिच्छ स्वाहा॥ॐ॥ॐ मजीनयपजा॥ मुनि॥ रुद्रजिह्वमसद्विकल्पजिनसं प्रह
षवच्छेदनी कामकार विषं विनर्क रत्नं नागप्रवन्तु कर्ण माहायं गवता विनर्कट नमयं विरुवागदा
वर्धं प्रहामकुवनेय समिन्मा वज्ञायनमेनम॥ वलिमका म॥॥ लाहानिपानमल लहाहय॥ॐ॥

यंसाहगवान् रून्कसम्यक् वृद्ध विद्यायनसंपन्नः सगताला कविदन्तु नृप नृषदम्भः अत्रिभिः सा
 दवानां कर्म नृषानां च वृद्धा रगवान् वृद्ध वल्लभं वृद्धं पूष्यमधुलनिर्घोषयामि ॥ **नियामकः ॥ धनव**
दुमलु लयावकः ॥ ॥ साहं वृन्नामा प्रवदसिनालयं वृद्धं मंदिवडा सपादाय यावदावाधिमधुनिषधुना
 तंवृद्धं रगवान् मलाका नृषिकं सर्वहृत् कैदमिन् सर्ववेन रुयान्वितं मलापूष्यमधुलनिर्घोषयामि ॥ **नियामकः ॥ धनव**
 मवधंगमामि द्विपदानामग्रं ॥ तु ॥ धनवृन्नामा मंदिवडा सपादाय यावदावाधिमधुनिषधुना
 नयया नृषवाना वृद्धया गुमलु लषधु मलु लषधु नृषवाना वृद्धया क सडमयाय ॥ वृद्ध रगवान् नृषवान् गतिं दध
 लसा मलाक वृद्धा वन रुयया डा विष्का क क सर्वहृत् रुन्क विष्क वरुमान रुयया डा वरुमान दक सकलं धया
 डा विष्का क क नानास मुनं भा वक मडि डा क ना तुल्य मडि डा वी ड क समल सक नां व दा डा विष्का क क
 द क वे विद्यालय दूट का डा न डा धन पूष्य रुयया डा विष्का क क देव मनूष्य नृषवान् द क यां ड रु म वृद्धा मति

॥ आनी ह्यमसतुविकल्पसि सं प्रदेव चेतनमर्तः काम कुो धर्मि विन न द दानं समुप वे डा ११ नं ॥ को हा स्य स्व स हि को द र स यं चि तो र मं द स
ने पुनो मं च वे रे स यं स मि न मान दू धा य न स्मे न मे ॥ १ ॥

नमः शिवाय दि ४

इयाडाविष्णु क म् पथि क वृद्ध या न न ध उ न क ल ॥ १ ॥ **धन धर्म मलु ल अ धि स्ताना** ॥ उं व ज उ म हं ॥ आ नः
धर्मा ग्र सं रू मं ज्ञान व र्था वि ष्व ध कं ॥ स म न र ड का या गं हा ष म लु ल म रू मं ॥ **वा या दि** ॥ उं ध र्मा म लु ल द व ना
य अ र्थ पु नि ष्ठ स्वा हा ॥ **॥ ज्ञान वा य ॥** आ र्थ पु रू पा ल मि ना ये व ज पु ष्यं पु नि ष्ठ स्वा हा ॥ **द थ** ॥ उं आ र्थ म लु
य हा य व ज पु नि ष्ठ स्वा हा ॥ **प र्थ** ॥ उं आ र्थ द श ह मि थ व ज पु ष्यं पु नि ष्ठ स्वा हा ॥ **द किं** ॥ उं आ र्थ स मा धि ना
जा य व ज पु नि ष्ठ स्वा हा ॥ **प थि** ॥ उं आ र्थ लं का व ना वा य व ज पु नि ष्ठ स्वा हा ॥ **उ क न** ॥ उं आ र्थ स ध र्म पु लु
लि का य व ज पु ष्यं पु नि ष्ठ स्वा हा ॥ **अ य** ॥ उं आ र्थ मि थ ग म ग नु क का ये व ज पु ष्यं पु नि ष्ठ स्वा हा ॥ **न थ** ॥ उं आ
य लि लि न वि ल ना य व ज पु ष्यं पु नि ष्ठ स्वा हा ॥ **वा य** ॥ उं आ र्थ सु व र्ध पु हा य व ज पु ष्यं पु नि ष्ठ स्वा हा ॥ **रू डा** ॥ **म**
की क थ पु जा ॥ गा द ॥ या ना र्था दि क द ४ स्व न फ म ह मां व कू र्प पा नि नां य र्थ धा तु क प ज न द ह न रु ४ स त्वा स मा
क र्ष मि ॥ अ ग्रान य ज ग स मू ध न मि य ४ सै क द ४ ४ स्वा र्थ वा सं व द्वा ष्ट पु न ४ स्थ ना य म ह न ध र्मा य न स्मे न मः

बलि ॥ नृका मूल्यादि ॥ **मधुलदाहलप** ॥ उं न मा सुसागवपुवदिनं ॥ अनाउपायिकं पावनिनीनिकं ॥ क
स्मिधर्मवत्ताय कूदं यममलुलनिर्वाग्यामि ॥ तव ॥ स्वहं वनामा अवंद सिनात्ययं ॥ म दिवसम
पोदाय यावदायो धिमलुनिरेलुना स्वर्मसननंग क्कामिविजागनामग ॥ ७ ॥ रुनाथरुमुवुजिमि
स्वनथडा २ नामनं क्रिपदाडाथ ॥ थंद मनाया डाडा ॥ थानीयादीनस ॥ थमुलिधर्मलाययाक ॥ स्वनागा
वाधिसत्ययागुम लुलष लुमरुन ॥ थनामंधर्मयाक सवननयाय ॥ धर्मरुयडा गधिदधालसा वागड
वमायामाह आदिं गीलगाडा विक्का क ॥ थधिदध प्रहाणल मिनायाक मवदाडा नरुल ॥ नमः ॥ **थनम**
धमलुल लंष हास्यो म धिखान ॥ सर्वलकनसं पुरु सधालिकु हावडि नं समनरुडवा वाग्रंधाधमलुलसा
यि ॥ ॥ **पाद्यात्रमन** ॥ संघमलुलदवनाय मरुधपुकि द्दुखाहा ॥ **खानमलुल डयक वलिमनय** ॥
उं संघमलुलसुब्रविद्यां नूसात्रयह ॥ **खानवाय** ॥ उं म्मा योवला किन इवनायवडपूष्यं पुनि द्दुखाहा ॥
दथ ॥ उं म्मा योमं जीयव डपूष्यं पुनि द्दुखाहा ॥ **पूष्य** ॥ म्मा योमं गहाग म्मा यव डपूष्यं पुनि द्दुखाहा ॥ **दकि**

[illegible]

वंनामा, उवंदगिनालयय, मंदिवसमूत्यादाय, यावदावाधिमलु निखलुना, अवेवरिक, संघसनधंगछामि
यूरमायावलाकि, मन्वत्र, अवेवरिक, वाधिसत्वसंघ, ४३, नधंगछामि, गनाधमगुं॥ ७ ॥ हनाथरुगुवृथवर
नासनद्रिथनाडा, थ, थंद, मनायाडा, थनियादिनस, थगुलिधर्म, नाययाह, मनामा, वाधिसत्वपागुमंछु
लखलुमहल, थनामा, अवेवरिक, संघयासत्रयाय॥ थसंघरूपगधिदधलसा, समरुसत्व, प्राधि
मूकिछासंविष्ठाक, थधि, क, अयायावलाकि, मन्वत्र, संघयाक, डावडा, नरुलधक, गुत्रयाक, थथनाया
दा॥ नर्वि ॥ **समंवाह॥ २५३॥ ममाघपाशमलुले मधिसान॥** ॥ उंरवलुनाहहंरुद॥ उंमदिनीवडिरुव
वडवधवंगुं वडनरुहं॥ सर्वसुलोमहाविरु, सुद्यपुकिनिर्मलं॥ समकरुडिचिराग्रं, हाखमलुले
मुरुम॥ **अघपायाद॥ ३॥ अ॥ ४॥ ममाघपाशलोय, मन्वत्र, मलुले, रुद्रावकाय, प्रवत्रसत्कानाय, पाया**
धं, आवमहंपुनि, छुखाहा॥ ॥ **खानमंदलडयकं वनडा, ससकय॥** ३॥ ममाघपाशमलुले सर्वविद्यानूसा

[illegible]

ॐ ग्ववग्गासु र कना प्र मि दं विहना किरा य ॥ ५

हं॥ उं वन्दे सुवन्दे वावलाकि निहं॥ उं हृदयनिहृदयाल्लहं॥ उं कालिनिमहाकालिनिहं॥ उं वज्रगर्भ
हं॥ उं मकरहं॥ मकरय कर्मावलम्बविश्रुतिनिहं॥ उं पुमिशानकूटहं स्वाहा॥ उं समन्तरहं॥
प्रणमः प्रणमः॥ वलिमकरादिवि॥ सुमि॥ लोकेश्वरं सिलंगमन्तं ममाद्यगुनसागरं ममिगारुकः
गमोति नमामि ममाद्यपादां॥ इति कावससुवनाथं कवृष्टालिन्धमानसं ममाद्यपादां नामानां लोकनाथं
नमामि हं॥ **॥ ममाद्यपादाय नमः॥** ॥ समन्तरहं सुमादशदिगलोकधरुः सन्निपतिगाव
दारुगवनावाधिसत्वा न्नावाध्यापाधाय म्य अरुभवासाय त्किचित्काय वाक्काहिरुसर्ववृद्धवाधिस
त्वा मानापि नमो नन्दन्या संगम्य ०० रुद्रन्मतिरुवा नमः मया पापं कर्म कर्म का निरुवा नमः ॥ नमः सर्वमः
कंपिष्ठयित्वा तुल्यित्वा सर्ववृद्धवाधिसत्वा नामावाध्यापादिक मग्राव नया प्रव नया पुनिदमनया
ननु समनस्य पुनिद दयामि॥ ॥ रुनाथ रुद्र नृपनिश्चयन नृकमनया स्यं थधिद ०० स्वव सिदिगसं

मूलावविष्ठाकथासपूर्वहक्रिन, पश्चिम, उरुन, अग्नि, नेमस्य, वायु, ॐ नमो, रुई उई, अमिगु दिगधं वि
क्राक, रगवक, गथागगदकगनस्कं, रुनं वाधिसत्वदकक, रुनं गुवु उपाध्वा कर्माकार्य, थधिपनिसक
वनजिपनिसन, थव २ नामन, ग्वेनष, जिमिसन, विकिधं रवसया दापापदयूव, शनिद, ववनन, नमठ, न
यादापापदयूव, रुनं समलुगथागग, वाधिसत्वयाक, रवसया दादयूव, रुनं माम, ववयाक, यादापापदयू
भवनया दापापदयू, सीगया दापापदयू, रुनं थगु लिङ्गमी सयादा रुनं ह थङ्ग नमसया दादयू नकर्मया
दं दयू भवनया दापापदयू, भवनया नकगुपापदयू, थधिं रपापसकल्यं, रुगुलियादाडा, ग्वलम
दाव, उ निग्वनकाडा, समलुगथागग, वाधिसत्वयाक, रुनं गुन, निरुगसक, रुनं, थधिगु, मृष्टया
रुडा नं, पुवनया दं विष्ठाक, दं रुनाया दं विष्ठाकथास, थधिं रुलपालसकवनं, जिमिसन, थम
पापयादा गुसियाडा, रुलपालपनिस्क, रुमलपाडा, समलुपापमीलेक, रुली रुना थरुगु वृधकविम

१०

क्रिया ना॥ ॥ समन्वारं रंगव न ४ यथा म मर्यादा ना यावद्भीव प्राधमनिपापं प्रमिवि वा ना निर्हृ
 स्तु निह न ३ स्तु, लज्जिना दयाव ना, सर्वसत्त्वेषु प्राधिह नेषु, न न स क न प, क कूट पिपिलिका मया दया

॥ हं निष्पन्नं निष्कृमिच्छं निष्कृमिच्छं च कमनया स्यां गुणनन्ना ग्या विद्याखेद हं न ॥ गं (धधान सा द्रपा २ या वृद्ध
पुण्यनि स न ग्वना ना धा न सा जिव न व ह न पा विद्या न धला ना पा विद्या य गुलि स न स म रू डा ॥ गं (धधान
सा क थि ०० त्या दि दं या डां म स्या क डा कु म सु ख क रू डा निं पा ना डां म स्या क पा विद्या य गुलि स म हल ला व
न क नू ना व न द या व न स म पा विद्या न या क प डं जा य ल प स पानी ०० त्या दिं धू लि न जा य ल प मि मि वा न्ना
दिं पिं जा य ल प मा नू ष्य स ल कि सि ०० त्या दिं थ थिं २ पा विद्या धू गुलि धर्म न प्र मि पा न या दा व विद्या क ॥

॥ एवं भवति ॥ माथे लासपादाय यावच्च विग्रहमिनीयावच्च यादयान्त्रं प्राप्तायात् प्रहाय
प्राप्तमिपातात्पुनरिति नमामि निरुक्तदधु निरुक्तमस्तु ॥ लङ्गि नादयो वन्ता सर्वसंख्यं प्राप्तिरुक्तं

मन्त्रकृत्तयः पिपिलिका मया दायः ॥ अवं मवाहं पुंथ मनाहं, तथा मायामिह मा, जिष्वा मनू जिष्वा, अनू वि
 धि, अनू कनामि ॥ ॥ हे नाथ रुगु नू द्य लया लसं, आहो दय का, थं, जिप नि सन, अगु धर्म ना यया
 न, ग्वनां ना, थनिया बाहि मवन, ग्वनां न सूर्यो ड दय मरुल, अना ना, पातिप नि स्या य मषू न, पाति स्या यगु
 व सं मरुल, पातिया न दया व मस्या न ॥ समुत्तमु, खड्ग, हृद्या वि आदि न पा ला डां मस्या न, जिप निल का
 व न रुय, पाति डा दया व न रुय ॥ समस्त स त्वया, विया क, धं रुं जा य लप, स पा नि आदि, धूलि न जा य
 लप, मिमिल आदि, थथिं स त्वया विया क, अगु लि, धर्म नं पु गिया ल यो य या न, गाल न रु लो जिप हि
 सन रुपा व इपू न प हि सन गथ व ल य या न, थ म थं कि थं जि मि स्य न गु वं ग थ आहो दय क ल, अथ
 जि मि स्य न या य रु ल रु ना थ रु गु नू ध क वि न गिया ना ॥ ॥ पुन न पुन स म न्वा, ह व मा ह नं ड ह ग व
 न व थ म, आर्या ह ना या व कि व, अद ला न न, मवु द्ग व र्य, मृखा वा द, सु ना मे थ न, मयं पु मा द स्था न, नू य

गीतवादिनं, माला, गन्ध, विनयन, कर्तृ, पद, धन, उव, गयन, महा गयन, सका, ल, शा, जनं, पु, निविन
 मा ॥ ॥ रु, डि, वि, प, ति, रु, दा, द, मि, स्थि, न, य, क, म, न, या, स, गु, न, दा, धा, या, थ, ग, (ध, व, इ, प, प्र, य, नि, स्थ, डि, व, न, व, रु
 न, पू, का, न, भ, व, न, म, वि, य, क, म, का, डा, म, ल, क, न, म, का, डा, दा, या, वि, ना, डा, म, का, डा, व, ल, म, ष, य, क, म, व, ल, स, म, न, डा
 व, रु, च, य, म, ष, गु, लि, म, न, डा ॥ म, स, ल, ख, व, म, झ, क, ल, पू, ग, डि, व, रु, ल, ना, म, दि, का, य, उ, व, व, रु, क, म, न, डा, ध, म, ना, रु,
 प, ष, व, न, म, रु, न, म, म, रु, व, वा, य, म, ध, क, ल, क, ख, न, न, म, रु, क, न, ल, क, प, व, ग, ध, न, ल, प, न, म, या, क, न, ना, व, रु, व, रु,
 मि, स, न, म, मि, डा, हि, दा, ल, ष, ना, प, लं, कि, स, म, धा, रु, ना, डा, वा, सा, उ, व, म, दि, धि, सी, म, धा, रु, व, ल, म, रु, य, क, म, व, ल,
 म, म, न, डा, ध, ग, व, रु, क, स, व, स, म, रु, व, ध, गु, मि, न, द, य, ति, स्थि, न, ध, ग, व, रु, क, स, क, ना, म, ल, म, म, ल, ध, क, गु, व, न, म,
 रु, द, य, का, रु, ल ॥ ॥ उ, व, म, वा, रु, म, रु, क, ना, मा, रु, मा, वे, ला, म, या, दा, य, या, व, उ, व, रु, द, य, न, रु, न, म, रु, द, रु,
 दा, न, म, रु, व, रु, च, य, म, रु, वा, द, स, वा, म, धि, य, म, धि, पु, मा, द, रु, न, न, रु, य, गी, न, वा, दि, न, म, ल, ग, म, ल, ग, ध, वि, न, य, न, व, रु,
 क, रु, व, न, धा, व, न, उ, व, ग, य, न, म, रु, स, य, न, म, रु, वा, रु, ल, न, पु, हा, य, म, रु, वा, रु, ल, ना, पु, नि, वि, न, मा, मि ॥

मननाहं प्रथमना (इति) मया मायासमरुतामिह मन्त्रसिद्धमन्त्रविधि मन्त्रकथामि ॥ ॥ हगुनहनाथ
 कलपालस्येन्द्राहादयकाथं उपनिषत्तन यडा २ नामनं धगुलिवलास थगुलिधर्मलाययाक गवला
 नाथनिया नागिवडाडा गवलागा सूर्याउदयमरुत थलागा अससखकायमषगा मवनमदियकं मेव
 याक मरु कं दानं मकाश वक्रचर्य मषगुलिं मनना नपूगडि वक्रहानलादिं काययववमु कं मनना थं
 मगाना ॥ हनयाखं हय मरुल वायथाय लाकखानं हय न स्वाकपं वग न लपनयाय ना नाव वुवमुकि
 सानमिय मरुल स्वागा पलाकि काडाडा लासा ७ वगादिं थान हन वल समखयकं मरुल संनय मष
 ना थथिं २ वमु क सं उपनिषत्तन ॥ हनाथ हगुन धगुलिवरु सडिमिषन यागाजनिदनं समरु
 कथागमजिष्पनीरु गथदि थं २ सना विष्ठाग मथदि थं २ प्रका जयाय कापायाय निस्थन गथ विधिया
 ममथं विधियाय गाडाजिमिषन कलपालयाहाथं थगुलि धर्मनाययाक धववपं हलाधकं विन
 नमिया ना हनाथ हगुनधकं ॥ न मरु कथादि ॥ ॥ मननाहं सिलसं मवन समादानं न मननागकध

१२

निमग्नगता रुदयं र्दन्तसम्यक् वृद्धविद्यावदसुपन्नसुगमलाकविनूतनपुत्रवदस्यभवनथिभस्म
दकानाचमनूषानाचवृद्धा रुगवान् ०० दं यथाषधं सिलं विह्वलावकावाय विरूप लिस्कावाय र्थगिक्ताला
य सर्वसत्त्वानां कुतूहलं य वृद्धत्वं प्रापयामि ॥ ॥ रुनाथरुगुवृद्धलपालयादया कणानथथिगुडरु
मधर्मलानां विपश्चिपुरु कि समस्तं न्थागनधक धायकां वनडा क्रम धागन रुयीडा गथिद धालसा
संसारलया रुत वरुमान रु विरयसियाडा विष्काक ॥ रुनं संसारसुतां गुडा यिगु विवालया रु विष्काक रुनं
द क विष्का न पाव रुयाडा विष्काक नागु प्रमद म विव ॥ द वा म लमनूष्य सत्व प्राविद क वक्राया रु विष्काक ॥
दूयाकानन उध नयाय रुद धगु लिम रु मिषद्रु न्मप निष्का सया रुडा या पुरा वन ॥ रुनाथरुगुवृद्धाडा
जिपनिसनं धगु लिधर्म दूयाका वल धालसा विरुया म लं कालया रु विरूप विस्का लया रु रुनं समीया
गकां द्यावायया रु रुनं समस्तं सत्व प्रा निपिंथ काय रु य क या रु रुनं जिपनिस क ल्यं न्थागनया पदला
यरुय क या रु धगु लिधर्म दूला लया म्हा र्थां म्हाडा जिमिसन धागु लि वरु धल व प रु ल रुना

कर्मसंघविषयः

जं पपूजा ॥ जिहं वूय वजं थिया ॥ ॥ धन मलु ल थि क स्था वाय ॥ पू ॥ ॥ वज स ल व म्मा पं ॥ व मु
कां जाय स्था क काय द रु ना ग व म्मा द मूल मं तु ल स न स पं पूजा ॥ म लु स्था काय द रु ना वि न पूजा ॥
वज जाय ॥ पा न न याय ॥ ॥ स ति ष्ण न ग न म लु ल ॥ कु म्मा स र्ग म ग पूजा ॥ द श मं तु ल पूजा ॥ ॥ सि ष्य
य ति क मां क थं ध म द स्था ॥ गु न म लु ल म न पूजा ॥ व मु का रु न क न स या ल व चा स्य मि षा पि य द स हा य
म लु ल स न य ॥ धि मा या क म द वि न ॥ वा कु पूजा म लु थि क कि न न वि न पूजा स र्ग काय ॥ ॥ धन वि
ज ॥ पं ला घं तु न ॥ स ना क न धा ३ ॥ उं म्माः रु वज म लु लं मू स र्ग वा का लं रु र्ग उं म्माः रु व २ म्मा का श धा
तु ग र्ग रु ॥ वज थ प का य स्था क काय वज जिल न य ॥ द रु जा या क र्ग न या वज पु वा रु पूजा १२ पूजा शी
ष सि का य रु ल ॥ ॥ ध नि यु मि मा स व ३ ॥ ॥ धन पू र्ण रु ल मा ॥ वि धि ॥ पं क प हा ल पूजा म्मा
वा य थं थ प्मा स्य स ना क न धा ३ वा स्य म लु लं तु पि द कि ना म न जा स्य स हि वा यं पु द कि ना ॥ उं रु मा व स्या

[illegible]

नागनागायवजपूष्यं पुनि च स्वाहा ॥ उरु ॥ उं पद्म नागनागायवजपूष्यं पुनि च स्वाहा ॥ ॐ ॥ उं शेषया ले
 नागनागायवजपूष्यं पुनि च स्वाहा ॥ अज ॥ उं क की ट क नागनागायवजपूष्यं पुनि च स्वाहा ॥ नमस्व ॥ उं
 कलिक नागनागायवजपूष्यं पुनि च स्वाहा ॥ वायव ॥ **मर्च वाक्क ॥** ॥ उं अनन वा मुकि न कू क क की
 ट क पद्म महापद्म शेषया ले कलिक वरूदाया द व नि महा द व नि साम शि पि द लु ध न अप ला ल रु
 वृ न्दा प न तु साग व महा सा ग व अन न क न पं श्री कान्ति महा कान्ति स नू प र डा दि क स ही द नः
 श्री वि महा सि त्रिं नाग य ग य ३ महा नागा धि प नि या तु उं व १ हं रं द स्वाहा ॥ **॥ क्रि ल व नि वि य**
नाग प जा म जा नं य ॥ उं ध र्मा द क ना क मा य ॥ **॥ ध मि धू न का डा अ य महा दान स्व सि वा व य**
द यं व जा य ट जी ना डा ना गया न हा ह ल य वा क्क ॥ उं न मू षि ती क ध मो व स लु सं व रिं न म या गो
 नागा धि प नि वि नं नि व उ आ ग न लं पु मा द न ॥ उं वि वि २ हं रं द स्वाहा ॥ **क डा हा क पू य नू य ॥ न ना व डः**

महा क क ३

